अशोक के धम्म का नैतिक तथा सामाजिक समरसता के पक्ष में पहलुओं का विश्लेषण

राजकुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ हिस्ट्री, सेठ जी. एल. बिहानी एस. डी. पोस्ट ग्रेजुएट, श्रीगंगानगर

सारांश

सम्राट अशोक का धम्म भारतीय इतिहास में नैतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मानवीय कल्याण की स्थापना का एक महत्वपूर्ण आदर्श प्रस्तुत करता है। अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात हिंसा और युद्ध की नीति का त्याग कर शांति, अहिंसा, दया, करुणा तथा सहिष्णुता पर आधारित शासन व्यवस्था को अपनाया। उनके धम्म का मुख्य उद्देश्य समाज में नैतिक चेतना का विकास करना तथा विभिन्न धर्मों, जातियों एवं सामाजिक समूहों के बीच आपसी सद्भाव और एकता को बढ़ावा देना था। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अशोक के धम्म के नैतिक एवं सामाजिक समरसता संबंधी पहलुओं का विश्लेषण करना है। अशोक के धम्म में माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान, सभी जीवों के प्रति दया, सत्य, संयम, बड़ों का आदर, छोटों के प्रति सद्व्यवहार तथा सभी धर्मों के प्रति सम्मान जैसे नैतिक सिद्धांतों को विशेष महत्व दिया गया था। उनके अभिलेखों और शिलालेखों से स्पष्ट होता है कि वे समाज में धार्मिक कट्टरता, आपसी द्वेष एवं सामाजिक विभाजन को समाप्त कर सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान की भावना विकसित करना चाहते थे। अशोक ने धम्म महामात्रों की नियुक्ति तथा लोककल्याणकारी कार्यों के माध्यम से इन आदर्शों को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अशोक का धम्म सामाजिक एकता, नैतिक अनुशासन, मानवीय मूल्यों एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करने वाली विचारधारा के रूप में महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में भी अशोक के धम्म के सिद्धांत सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक आचरण और समावेशी समाज के निर्माण के लिए प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, अशोक का धम्म केवल एक नैतिक आचार संहिता नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता एवं लोककल्याण पर आधारित एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण है।